शेख़ फ़रीद - सबद २७

फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७९

फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु ॥
हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु ॥२३॥

सार: जब हमारे कर्म हमारी आंतरिक इच्छाओं के विपरीत होते हैं तब यह हमारी दोहरी मानसिकता (पाखंड) का संकेत होता है। ईमानदारी के बजाय अहंकार से प्रेरित कर्म अक्सर दिशा और गहराई खो देते हैं जिसके परिणामस्वरूप हम जो हैं और जो हम चित्रित करते हैं, उसके बीच एक टकराव पैदा हो जाता है। हमारे इरादों, प्रतिक्रियाओं और अपेक्षाओं के बीच असंगति आमतौर पर निराशा की ओर ले जाती है जो परिणामों के पीछे भागने की निरर्थकता को उजागर करती है। सच्चा संतोष तब ही आता है जब हमारे इरादे और कर्म एकरूप हों - जब हमारे भीतर का स्वरूप हमारे बाहरी प्रयासों में पूरी तरह शामिल हो। अन्यथा, चाहे प्रयास कितना भी बड़ा क्यों न हो, वह भीतर से खोखला ही लगता है।

फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु ॥
फ़रीद कहते हैं कि किसान रसीले अंगूर चाहता है लेकिन कांटेदार बबूल बोता है। आत्म-धोखे का एक रूपक, बुरी नीयत रखते हुए, खुशी की चाह रखना।

हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु ॥२३॥
मोटा ऊन कातकर फिर भी रेशमी वस्त्र पहनने की चाह रखना, यह एक ऐसी मानसिकता की ओर इशारा करती है जहाँ हमारे कर्म और अपेक्षाओं के बीच सचेत तालमेल नहीं होता। (२३)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद हमारे कर्मों और अपेक्षाओं की असंगति पर एक प्रभावशाली चिंतन प्रस्तुत करते हैं। उनके रूपक काँटेदार बबूल बोकर मीठे अंगूर की उम्मीद करना और मोटा ऊन कातकर रेशम

पहनने की चाह रखना ये दोनों छवियाँ उस आत्म-भ्रम को दर्शाती हैं। वह हमें याद दिलाते हैं कि फल वही मिलेगा जो बीज बोया गया है, न केवल बाहरी स्तर पर बल्कि भीतर भी। यदि हम गहन ज्ञान, तृप्ति या प्रेम की खोज में हैं तब हमें अपने दैनिक जीवन की हर क्रिया में इन्हीं गुणों को बोना होगा। यह हमें ईमानदारी और तालमेल की ओर प्रेरित करता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com